3

ISSN: 2705-4810

साहित्यलोक

भाषा, साहित्य, संस्कृति और साहित्यिक सिद्धान्त की अनुसंधानपरक शोध पत्रिका

वर्ष ४३ । अंक २ । सम्वत् २०७९ । ज्येष्ठ (सन् २०२२)

संगोष्ठी विशेषांक

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राम और रामायण का स्वरूप

प्रधान सम्पादक
डॉ. संजीता वर्मा

सम्पादक
डॉ. सुमन रानी
संजय कुमार

सह सम्पादक
डॉ. श्वेता दीप्ति
प्रीति गुप्ता

हिन्दी केन्द्रीय विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, नेपाल

साहित्यलोक

भाषा, साहित्य, संस्कृति और साहित्यिक सिद्धान्त की अनुसन्धानपरक शोध पत्रिका

वर्ष ४३। अंक २। सम्वत् २०७९। ज्येष्ठ (सन् २०२२)

विशेषांक

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राम और रामायण का स्वरूप

(भाग-३)

प्रधान सम्पादक
डॉ. संजीता वर्मा

सम्पादक
डॉ. सुमन रानी, संजय कुमार

सह सम्पादक
डॉ. श्वेता दीप्ति, प्रीति गुप्ता

हिन्दी केन्द्रीय विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर नेपाल

रामायण काल में वैज्ञानिक आविष्कार 168
प्रा.डॉ. वड्चकर शिवाजी

3. रामचरितमानस में आदर्श और मर्यादा 172
डायमंड साहू

4. रामायण का मूल दर्शन 177
डॉ. किरन सिंह

35. भारतीय समाज और राम का चरित्र 180
डॉ. मधु बाला सिन्हा

36. रामकथा के मौलिक दृष्टा - नरेंद्र कोहली 185
प्रेम कुमारी

37. श्री राम विवाह का तात्विक रहस्य। 192
डॉ. संध्या उपाध्याय

38. चिरन्तन चिन्तन धारा का शाश्वत वैचारिक प्रवाह : श्रीराम 197
डॉ. राम विनय सिंह

39. राम काव्य की विकसनशील परंपरा और साकेत का सारतत्त्व 203
डॉ. राम शेख पंडित

40. राष्ट्र कल्याण एवं रक्षा संरचना में रामादर्श : समीक्षात्मक अध्ययन 208
प्रोफेसर प्यारेलाल आदिले

41. आदर्श समाज निर्माण में राम चरित्र की भूमिका 218
प्रो. फिरत बिंझवार

42. थाईलैंड की नाट्य कला में रामायण 222
अमृतपाल सिंह

43. काव्य नाटक 'अग्निलीक' के राम का चरित्र चित्रण 227
वीरेंद्र कुमार तिवारी

44. प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री का सामाजिक संघर्ष (विशेष संदर्भ : सेवासदन और प्रतिज्ञा) 232
सायमा

45. श्रीरामचरितमानस में राम का स्वरूप 239
डॉ विद्याधर मेहता

46. नरेंद्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों में राजनैतिक चेतना 244
दिलीप कुमार

47. भारत के भित्ति-चित्रों में राम कथा प्रसंगो का चित्रांकन
(ओरछा में स्थित लक्ष्मी मंदिर के विशेष संदर्भ में) 248
डॉ. अमिता खरे

48 रामचरितमानस में राम का स्वरूप 254
डॉ. सरिता वैष्णव

49. वाल्मीकि रामायण में सामाजिक व्यवस्था का अनुशीलन 259
सतीश कुमार भारद्वाज

College, Sonpeth • Late Ramesh Warpudkar (ACS) • Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (A.S.) College, Sonpeth Dist. Parbhani

रामायण काल में वैज्ञानिक आविष्कार

प्रा.डॉ. वड्चकर शिवाजी
हिंन्दी विभाग
कै. रमेश वरपुडकर महा. सोनपठ
जिल्हा परभणी, महाराष्ट्र

इतिहास और तथ्य घटनाओं के साथ मानव की विकास यात्रा जारी है। मानव अपने विकास के अनुक्रम में ही वैज्ञानिक अनुसंधानों से सायास-अनायास जुड़ा है। ये वैज्ञानिक उपलब्धियाँ अविष्कार रामायण, महाभारत काल से ही तरह-तरह के चरमोत्कर्ष पर है। जिस तरह ऋग्वेद के लेखन-संपादन काल में संस्कृत भाषा विकास के शिखर पर थी । रामायण का शब्दार्थ भी राम का 'अयण' अर्थात 'भ्रमण' है । रामायण एकांगी दृष्टिकोण का व तांत भार नहीं है। इसमें कौटुंबिक संसारिकता है। राज समाज संचालन के कुट मंत्रा है, भुगोल है, वनस्पति और जीव-जगत है, राष्ट्रीयता है, राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग का चरम है, अस्त्र-शस्त्र है। यौद्धिक कौशल के गुण है। भौतिक वाद है। कुणाद का परमाणुवाद है। सांख्य-दर्शन और योग के सुत्र है। वेदांत दर्शण है और अनेक वैज्ञानिक उपृ.लब्धियाँ है। मा. गांधी का रामराज्य इसी रामायण में है। पं. दीनदयाल उपाध्याय का आध्यात्मिक भौतिकवाद के उत्स इसी रामायण में है। वास्तव में रामायण और उसके परवर्ती ग्रंथ कवि या लेखक की कपोल-कल्पना न होकर तत्कालीन ज्ञान के विश्वकोष है। जर्मन विद्वान मैक्समुलर ने तो ऋग्वेद को अपने युग का 'विश्वकोष' कहा है।

लंकाधीश रावण ने विविध प्रकार की विधाओं को बढाने की दृष्टि से यथोचित धन व सुविधाएँ उपल्बध ा कराई थी। रावण के पास लड़ाकू वायुयानों और समुद्री जल पोतो के बड़े भंडार थे। प्रेक्षपास्त्रा और ब्रम्हास्त्रों का अकुत भंडार व उनके निर्माण में लगी अनेक वेधशालाएँ थी। राम-रावण का युध्द केवल राम और रावण के बीच का युद्ध न होकर वह एक विश्वयुद्ध था। जिसमें उस समय की समस्त विश्व-शक्तियों ने अपने-अपन मित्र देश के लिए लडाई लड़ी थी। परिणाम स्वरुप ब्रम्हास्त्रों के विकट प्रयोग से लगभग समस्त वैज्ञानिक अनुसंध ाान-शालाएँ उनके आविष्कारक वैज्ञानिक व अध्येता काल कवलित हो गए। यही कारण है कि हम कालांतर में हुए महाभारत युद्ध में भी वैज्ञानिक चमत्कारों को रामायण काल से शेष बचा जो विज्ञान था, यह महाभारत युद्ध के विध्वंस की लपेट में आकर नष्ट हो गया। इसीलिए महाभारत के बाद के युद्धों में खतरनाक अस्त्र-शस्त्रों से लड़े, ज्यादातर स्थल सेना के माध्यम से ही लड़े गए है। 20वीं सदी में हुए द्वितीय विश्वयुध्द में जरुर हवाई हमले के माध्यम से अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा-नागा शाकी परमाणु हमले किए।

वाल्मीकि रामायण या अन्य रामायण ग्रंथो में हमे 'पुष्पक विमान' का उपयोग विवरण मिलता है। तो हमें पता चलता है की इस युग के राक्षस व देवता न केवल मात्र विमान शास्त्र के ज्ञाता थे। बल्कि सुविध ाायुक्त आकाशगामी साधनों के रुप में वाहन उपलब्ध थे। रामायण के अनुसार 'पुष्पक विमान' ने निर्माता ब्रम्हा थे। ब्रम्हाने यह विमान कुबेर को भेट किया था। कुबेर से इसे रावण ने छीन लिया। रावण की मृत्यू

के बाद बिभीषण इसका अधिपति बना और उसने फिर से इसे कुबेर को दे दिया। कुबेर ने इसे राम को उपहार में दे दिया। राम लंका विजय के बाद अयोध्या इसी विमान से पहुँचे थे। रामायण में उल्लेखित पुष्पक विमान मोर जैसी आकृति का आकाशचारी विमान था, जो अग्नि-वायु की समन्वयी उर्जा से चलता था। इस की गति तीव्र थी और चालक की इच्छानुसार इसे किसी भी दिशा में गतिशील रखा जा सकता था। इसे छोटा-बड़ा भी किया जा सकता था। यह सभी ऋतुओं में आरामदायक यानी वातानुकूलित था । इसमें स्वर्ण खंभ, मणिनिर्मित दरवाजे, मणि-स्वर्णमय सीढियां, वेदियाँ (आसन) गुप्त गृह, अट्टालिकाएँ (कैबिन) तथा नीलम से निर्मित सिंहासन (कुरसियाँ) थी यह दिनरात गतिमान रहने में समर्थ था। इससे स्पष्ट होता है की अन्नत प्रोद्योगिकी और वास्तुकला का अनुठा नमुना उस वक्त था। 'ऋग्वेद' में भी चार प्रकार थे विमानों का उल्लेख है। जिन्हे आर्य अनार्य उपयोग में लाते थे। इन्ही चारों को 'शकुन, त्रिपुर, सुंदर और रुक्म" नामों से जाना जाता था। ये अश्वहीन, चालक रहित, तीव्रगामी और धुल के बादल उड़ाते हुए आकाश में उड़ा करते थे। इनकी गति पतंग पक्षी के समान, दिनरात उड़ते हुए, आकृती नौका जैसी थी। 'त्रिपुर' विमान तीन तल्लों वाला था, वह जल, थल एवं नभ तीनों में विचरण कर सकता था। रामायण के हनुमान की आकाश-यात्राएँ, महाभारत में देवराज इंद्र का दिव्यरथ, कार्तवीर्य अर्जुन का स्वर्ण विमान एवं सोम-विमान, पुराणों में वर्णित नारदादि की आकाश यात्राएँ एवं विभिन्न देवी-देवतांओं के आकाशगामी वाहन रामायण-महाभारत काल में वायुयान और हेलीकॉप्टर जैसे यांत्रिक साधनों की उपलब्धि के प्रमाण है।

वैज्ञानिक अनुसंधानों ने तय किया है कि रामायण काल में वैमानिकी प्रोद्योगिकी अधिक विकसित थी, जिसे आज समझ पाना कठिन है। रावण का ससुर मयासुर ने भगवान विश्वकर्मा से वैमानिकी विद्या सीखी और पुष्पक विमान बनाया। जिसे कुबेर ने हासिल कर लिया। पुष्पक विमान की प्रोद्योगिकी का विस्तृत ब्योरामहर्षि भारद्वाज द्वारा लिखित पुस्तक 'यंत्र-सर्वेश्वम' में भी किया गया था। नए शोंधों से पता चलता है कि पुष्पक विमान एक ऐसा चमत्कारिक यात्री विमान था, जिसमें चाहे जितने भी यात्री सवार हो जाएँ, एक कुरसी हमेशा रिक्त रहती थी। यही नही यह विमान यात्रियों की संख्या के और वायु के घनत्व के हिसाब से स्वयमेव अपना आकार छोटा या बड़ा कर सकता था। इस तथ्य के पीछे वैज्ञानिकों का यह तर्क है कि वर्तमान समय में हम पदार्थ को जड़ मानते है, लेकिन हम पदार्थ की चेतना को जागृत करले तो उसमें भी संवेदना सृजित हो सकती है। रामायण काल में विज्ञान ने पदार्थ की इस चेतना को संभवतः जागृत कर लिया था, इसी कारण पुष्पक विमान स्व-संवेदना से क्रियाशील होकर, आवश्यकता नुसार आकार परिवर्तित कर लेने की विलक्षणता रखता था। रामायण एवं राम-रावण लीला विषयक ग्रंथो में विमानों की केवल उपस्थिति एवं उनके उपयोग का विवरण है, इस कारण कथित इतिहासतज्ञ इस पुरे युग को कपोल-कल्पना कहकर नकारने का साहस कर जलते है लेकिन विमानों का निर्माण, इनके प्रकार और इनके संचालन का संपूर्ण विवरण महर्षि भरद्वाज लिखित 'वैमानिक शास्त्र' में है। यह ग्रंथ उनके प्रमुख ग्रंथ 'यंत्र-सर्वेश्वम' का एक भाग है। इनके वैमानिक शास्त्र में चार प्रकार के विमानों का वर्णन है। ये काल के आधार पर विभाजित है। इन्हे तीन श्रेणीयों मे रखा गया है। इसमें 'मंत्रिका' श्रेणी में वे विमान आते है, जो सत युग और त्रेतायुग में मंत्र और सिद्धियों से संचलित व नियंत्रित होते थे। दुसरी श्रेणी 'तांत्रिका' है, जिसमें तंत्र शक्ति से उड़नेवाले विमानों का ब्योरा है। इसमें तीसरी श्रेणी में कलयुग में उड़नेवाले विमानों का ब्यारा है, जो इंजन की ताकत से उड़ान भरते है।

रामायण काल में वैमानिकी प्रोद्योगिकी विकास के चरमपर थी, यह इन तथ्यों से प्रमाणित होता है कि वैमानिक शास्त्र में विमान चालक को किन गुणों से पारंगत होना जरुरी है। यह भी उल्लेख इस शास्त्र में है। इसमें प्रशिक्षित चालक (पायलट) को 32 गुणों में निपुण होना जरुरी माना है। इन गुणों में कौशल चालक ही 'रहस्यग्नोधिकारी' अथवा व्योमयाधिकारी कहलाता है। चालक को विमान-चालन के समय किस प्रकार की पोषाक होनी चाहिए, यह 'वस्त्राधिकरण' और किस प्रकार का आहार गृहण करना चाहिए यह 'आहाराधिकरण'

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

में किए गए उल्लेख से स्पष्ट होता है।

अध्यायों में किए गए उल्लेख से स्पष्ट होता है। राम-रावण युद्ध केवल धनुष्यबाण और गधा-भाला जैसे अस्त्रों तक सीमित नही था। मदनमोहन शर्मा 'शाही' के तीन खंडों में छपे बृहत उपन्यास 'लंकेश्वर' में दिए उल्लेखों से यह साफ जाहीर होता है कि रामायण काल में वैज्ञानिक आविष्कार चरमोत्कर्ष पर था। राम और रावण दोनों सेना नायकों ने भयंकर आयुधों का खुलकर प्रयोग भी किया था। 'लंकेश्वर' उपन्यास को ही प्रमुख आधार बनाकर 'रावण' धारवाहिक का प्रसारण जी टी वी पर किया गया था, जिसमें राम और रावण को सामान्य मनुष्य की तरह विकसित होते दिखाया गया था। लंका उस युग में सबसे संपन्न देश था। लंकाधीश रावण के पास यथोचित धन व सुविधाएँ थी। रावण के पास लडाकू वायुयानों और समुद्धी जलपोतों के बड़े तज्ञ थे। प्रक्षेपासत्र और ब्रम्हास्त्रों का अटूट भंडार निर्माण की अनेक वेधशालाएँ उनके पास थी। दुरसंचार यंत्र भी लंका में उपलब्ध थे।

राम-रावण युद्ध दो संस्कृतियों के अस्तित्व के वर्चस्व के लिए लड़ा गया भीषण आणविक युद्ध था, जिसमें विश्व की समस्त शक्तियों ने भागीदारी की थी। यह सभी रामायणे निर्विवाद रुप से स्वीकारती है कि रावण के पास पुष्पक विमान था और रावण सीता को इसी विमान में बिटाकर अपहरण कर ले गया था। 'लंकेश्वरी' में वायुयानों का उस युग में उपलब्ध होने का विस्तृत ब्योरा है। गंधमादन पृ.र्वत ग्रंथो की नगरी थी। यहाँ के गृध्रराज भुमि, समुद्री व आकाशीय मार्ग पर भी अधिकार रखते थे। यह नगरी सम्राट संपाती के पुत्र सुपार्श्व की थी। संपाती राजा दशरथ के सखा थे। संपाती वैज्ञानिक था। उसने छोटे-बड़े वायुयानों और अंतरिक्ष यात्री की वेशभुषा का निर्माण किया था। सुपार्श्व ने ही हनुमान को लघुयान में बिठाकर समुद्रलंघन कराकर शिकुट पर्वत पर विमान उतारा था। शिकुट पर्वत लंका की सीमा में था। सुपार्श्व के पास आग्नेयास्त्र भी थे, जिनसे प्रहार कर हनुमान ने नागमाता सुरसा को परास्त किया था। इस अस्त्र के प्रयोग से समुद्र में आग लगी और नाग जाति जलकर नष्ट हो गई। त्रिकुट पर्वत के पहले मैनाक पर्वत था, जिसमें रत्नों की खाने थी। रावण इन रत्नों का विदेश व्यापर करता था लंका की संपन्नता का कारण भी यही खाने थीं। सुपार्श्व ने राम-रावण युद्ध में राम का साथ दिया था।

'लंकेश्वर' के अनुसार लंका में ऐसे वायुयान भी थे, जो आकाश में बिना चालक से बड़े हो जाते थे और आलोप भी, ये स्वयंचलित थे। उस समय आठ प्रकार के विमान थे, जो सौर्य उर्जा से संचालित होते थे। रावण पुत्र मेघनाद की निंकुभिला वेधशाला थी। जिसमें प्रतिदिन एकदिव्य रथ अर्थात लड़ाकु विमान का निरंतर निर्माण होता था। मेघनाद के पास आँखों से ओझल होकर, धुआँ छोड़नेवाले विमान भी थे। जिससे दिन में अंधकार हो जाता था। यह धुआँ विशाक्त गैस अथवा अश्रु गैस का हिस्सा होता था। ये विमान नीचे आकर बमबारी भी करते थे।

मेघनाद की वेधशाला में 'शस्त्रायुक्त स्यंदन' (रॉकेट) का निर्माण होता था। साथ ही रावण के पास भस्मलोचन जैसा वैमानिक था। जिससे एक विशाल दर्पण यंत्र का निर्माण किया था। इससे प्रकाशपुंज वायुयान पर छोड़ने से यान आकाश में ही नष्ट हो जाते थे। लंका से निष्कासित किए जाते वक्त बिभीषण भी अपन साथ कुछ दर्पण यंत्र ले आया था। इन्ही 'दर्पण यंत्रों' मे सुधारकर अग्निवेश ने इस यंत्रों को चौखटों पर कसा और इन यंत्रों से लंका के यानों की और प्रकाशपुंज फेंका, जिससे लंका की यान शक्ति नष्ट होती चली गई। वाद में रावण ने अग्निवेश की इस शक्ति से निपटने के लिए सद्धासुर वैज्ञानिक को नियुक्त किया। राम द्वारा सेना के साथ लंका प्रयाण के समय द्रुमकुल्य देश के सम्राट समुद्र ने रावण से मैत्री होने के कारण राम को अपन देश से मार्ग नही दिया तो राम ने अगस्त्य के अमोध अस्त्र (ब्रम्हास्त्र) को छोड़ दिया। जिससे पुरा द्रुमकुल्य (मरुकांतार) देश ही नष्ट हो गया। यह अमोध अस्त्र हाईड्रोजन बम था। एटम बम ही था। मेघनाद की वेध शाला में शीषें की भट्टियाँ थी। जिनमें कोयला और विद्युतधारा प्रवाहित की जाती थी। इन्ही भट्टियाँ में परमाणु अस्त्र बनते थे।

युद्ध के समय राम सेना पर सुद्धासुर ने ऐसा विकट अस्त्र छोड़ा जो ब्रम्हास्त्र से भी जादा ताकतवान था, जो सुवेल पर्वत की चोटी को सागर में गिराता हुआ सीधे दक्षिण भारत के गिरी को समुद्र में गिरा दिया। सुद्धासुर का अंत करने के लिए अगस्त्य ने सुद्धासुर के उपर ब्रम्हास्त्र छुड़वाया, जिससे सुद्धासुर और उनका सैन्य मारा गया। लंका के शिव मंदिर भी विस्फोट के साथ ढहकर समुद्र में गिर गए। रावण जब अपन अंत समय के पृ.हले वेधशाला में दिव्य रथ बनाने में लीन था, तब अग्निवेश ने अग्निगोले छोड़कर वेधशाला और उसके सम्प्रर्ण क्षेत्र को नष्ट कर दिया था। जब रावण के प्राणों का अंत अगस्त्य का ब्रम्हास्त्र नहीं कर पाया तो राम ने ब्रम्हा द्वारा निर्मित ब्रम्हास्त्र रावण पर छोड़ा, जो बहुत ही ताकतवान था, जिससे रावण के शरिर के तुकड़े-तुकड़े हो गए और वहीं रावण की मृत्यु हो गई। साथ ही हमें यह भी देखने मिलता है की राम को अग्निवेष ने एक कांच दिया था, जो संभवतः दुरबीन था। इसी दूरबीन से रामने लंका के द्वार पर लगे 'दारुपंच अस्त्र' को देखा था ओर उसपर प्रक्षेपासत्र छोड़कर उसे नष्ट कर दिया था।

हमें रामायण काल में और एक पात्र ऐसा दिखाई देता है जो आलसी है। जो छह माह सोता रहता था और एक दिन के लिए भोजन आदि के लिए उठता और फिर सो जाता था। वास्तविकता कुछ अलग है कुंभकर्ण राष्ट्रभक्त था ही, साथ में एक वैज्ञानिक था। वह अपनी पत्नी के साथ वेधशाला में पत्नी को निरंतर सहयोग करता था, अविष्कार करने के लिए। ऐसे में वह खाने-पीने की सुध को भूल जाता था, और वेधशाला से कम बाहर निकलता था। कुंभकर्ण अपनी वेधशाला में यंत्र मानव (रोबोट) दारुपंच अस्त्र (रडार) दर्पण (दुरदर्शन जैसा यंत्र) व अणुअस्त्रों के निर्माण में लगा रहता था।

सारत

राम रावण युध्द में प्रयोग में लाई गई शक्तियों को मायावी और दैवीय शक्ति मानकर हमने उनके वास्तविक महत्व अविष्कार को ज्ञान का सामर्थ्य न कहकर उसे नकारा है। वास्तव में यह विध्वंसकारी परमाणु अस्त्र और अदभुत भौतिक यंत्र ही थे। इनके सुक्ष्म और यथार्थ विवेचना के लिए इनके रहस्यों को समझना अभी बाकी है। छात्रों को रामायण में रामकथा पढ़ाने के बजाय हम यदी रामायण में जुड़े विज्ञान से संबंधित अंशों को पाठ के रुप में संकलित कर पढ़ा सकते है तो छात्रों में प्राचीन भारतीय विज्ञान को जानने की जिज्ञासा का प्रादुर्भाव होगा।

संदर्भ

1. वाल्मीकि रामायण
2. रामकथा उत्पति और विकास डॉ. फादर कामिल बुल्के।
3. हिंदी प्रबंध काव्य में रावण - डॉ. सुरेशचंद्र निर्मल।
4. लंकेश्वर - मदनमोहन शर्मा 'शाही'।
5. प्रमाण तो मिलते है - डॉ. ओमप्रकाश श्रीवास्तव।
6. रावण-इतिहास-अशोक कुमार आर्य।
7. साहित्य अमृत पत्रिका अक्तुबर, 2018।
8. साहित्य अमृत पत्रिका अक्तुबर, 2012।

Late Ramesh Warpudkar (A.C.S) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani